धनवर्षिणी स्थायी लक्ष्मी साधना

सामाजिक व्यवस्था को संतुलित बनाये रखने के लिए चार प्रकार के पुरूषार्थो-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का निर्धारण किया गया है। ये चारों पुरूषार्थ प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के आवश्यक अंग हैं और एक-दूसरे के पूरक हैं। पुरातन युग धर्म प्रधान युग था और वर्तमान युग अर्थ प्रधान युग है। युग बदला, आवश्यकताएँ बदली और मान्यताएं भी बदल गई, आज मानव जीवन का केन्द्र बिन्दु अर्थ हो गया है और अर्थ पर ही शेष तीनों पुरूषार्थ आधारित हो गये हैं। इसलिए आज व्यक्ति की सर्वप्रथम आवश्यकता है, कि वह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो, उसके पास धन का न होना, सुखद जीवन का अंत ही माना जाता है।

जीवन में दुःख, परेशानी, पीड़ा, कष्ट, दरिद्रता कुछ तो भाग्य का दोष कहा जा सकता है, और कुछ व्यक्ति के खुद के आचरण, जो उसके इस प्रकार के दारूण्य को भोगने के लिए मजबूर कर देता है। कितने ही धनोपार्जन के उपाय क्यों न कर लें, प्रतिवर्ष दीपावली को मंत्र जप, अनुष्ठान आदि कार्य क्यों न सम्पन्न कर लिए जायें, फिर भी लक्ष्मी स्थाई रूप से किसी के घर में नहीं रह पाती..... और फिर एक बार व्यक्ति के मन में अपने कर्म, भाग्य तथा पूजा पाठ के प्रति सन्देह, भ्रम, अविश्वास की दीवार खड़ी हो जाती है- जबकि ऐसा नहीं है।

लक्ष्मी का स्थायीवास सम्भव है, किन्तु उसके लिए नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था और उसी के अनुकूल वातावरण बनाना पड़ता है, तभी लक्ष्मी प्रसन्न रूप से वास करती है। जिस घर में मधुरता का वातावरण हो। वहाँ रहने वाले लोग सत्यभाषी हो। धर्म को मानने वाले तथा सदाचारी हो। घर में किसी प्रकार का कोई लड़ाई झगड़ा या कलह की स्थिति उत्पन्न न होती हो। सभी सदस्य मृदुभाषी हों। एक दूसरे का सम्मान करते हों। जिस घर के लोग अपने इष्ट या गुरू के प्रति श्रद्धानत हो। जहाँ गुरू को ईश्वर तुल्य मान कर पूजा होती हो। जहाँ घर में आये अतिथि का ईश्वर की तरह आदर सत्कार किया जाता हो। आध्यात्मिक वातावरण हो, त्यौहार पर पूजा पाठ होता हो।

जब घर में ऐसा वातावरण हो ओर यदि धनवर्षिणी लक्ष्मी प्रयोग सम्पन्न कर लिया जाय, तो लक्ष्मी कहीं और जा ही नहीं सकती, उसे रहने के लिए विवश होना पड़ता है।

प्रयोग विधि -

► इस प्रयोग के लिए आवश्यक सामग्री है- 'धनवर्षिणी लक्ष्मी यंत्र' व 'धनाक्षी माला' जो मंत्र सिद्ध व प्राण-प्रतिष्ठियुक्त हो।

► कार्तिक शुक्ल पक्ष लक्ष्मी दिवस के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न करें, यदि इस दिन न कर सकें, तो किसी भी रविवार के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।

► इस प्रयोग को ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात् सूर्योदय से पूर्व करें।

► पूर्व दिशा की ओर मुँह करके बैठे।

► पीले आसन का प्रयोग करें।

► साधक स्नान आदि क्रियाओं से निवृत होकर साधना कक्ष में बैठ जायें, फिर गुरू पूजन सम्पन्न करें। एक चौकी पर सफेद रंग का वस्त्र बिछा दें और उस पर तांबे या स्टील की एक छोटी सी प्लेट में 'श्रीं' बीज मंत्र अंकित करें।

► इसके पश्चात् यंत्र को जल से स्नान कराकर, पोछकर उसे प्लेट में स्थापित कर दें तथा कुंकम, अक्षत, पुष्प, धूप व दीप आदि से विधिवत् पूजन करें।

► पूजन के पश्चात् हाथ में जल लेकर अपने गोत्र व नाम का उच्चारण कर अपने कार्य की पूर्णता हेतु धनवर्षिणी लक्ष्मी से प्रार्थना करें, फिर निम्न मंत्र से ध्यान करें-

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड् भुजां च चतुर्मुखीम्।
त्रिनेत्रां खड्ग त्रिशूल पद्म चक्र गदा धराम्।।
पीताम्बरा धरां देवीं नानालंकार भूषिताम् ।
तेजः पुन्ज धरीं श्रेष्ठां ध्यायेद बाल कुमारीकाम्।।

❖ फिर निम्न मंत्र का धनाक्षी माला से 1 माला जप करें-

मंत्र-।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं धनवर्षिणी लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम गृहे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।।

❖ जप के बाद थोड़े से अक्षत यंत्र पर चढ़ा दें।

इसके पश्चात् यथाविधि मानसोपचार पूजन कर निम्न स्तोत्र का एक बार पाठ करें--

ॐ कारं लक्ष्मी रूपं तु, विष्णुं हृदयमव्ययम्।
विष्णुमानन्दमव्यक्तं, ह्रींकारं बलि-रूपिणीम्।।
क्लीं अमृतानन्दिनीं भद्रां, सदाऽनन्द प्रदायिनीम्।
श्रीं दैत्यशमनीं शक्तिं, मालिनीं शत्रु मर्दिनीम्।।
तेजः प्रकाशिनीं देवीं, वरदां शुभ कारिणीम्।
ब्राह्मीं च वैष्णवीं रौद्रीं, कालिका रूप शोभिनीम्।।
अकारः लक्ष्मी रूपं तु, उकारः विष्णुमव्ययम्।
मकारः पुरूषोऽव्यक्तो, देवी प्रणद उच्यते।।
सूर्य कोटि प्रतीकाशं, चन्द्र कोटि सम प्रभम्।
तन्मध्ये निकरं सूक्ष्मं, ब्रह्म रूपं व्यवस्थितम्।।
ॐकारं परमानन्दं, सदैव सुख सुन्दरीम्।
सिद्ध लक्ष्मि मोक्ष लक्ष्मि, आद्य लक्ष्मि! नमोऽस्तुते।।
सर्व मंगल मांगल्यें, शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि! नमोऽस्तुते।।
प्रथमं त्र्यम्बका गौरी, द्वितीयं वैष्णवी तथा।
तृतीयं कमला प्रोक्त, चतुर्थ सुन्दरी तथा।।
पंचमं विष्णु शक्तिश्च, षष्ठं कात्यायनी तथा।
वाराही सप्तमं चैव, ह्यष्टमं हरि वल्लभा।।
नवमी खड्गिनी प्रोक्ता, दशमं चैव देविका।।
एकादशं सिद्धलक्ष्मीर्द्वादशं हंस वाहिनी।।

फिर यंत्र पर पुष्प चढ़ावें। पाठ समाप्ति के पश्चात् एक माला मूल मंत्र का पुनः जप करें।

जप करने के बाद यंत्र पर अक्षत और पुष्प चढ़ावें।

उपरोक्त विधान को सम्पन्न करने के बाद एक सप्ताह के भीतर ही यंत्र व माला दोनों को किसी नदी या कुएं में प्रवाहित कर दें। इस प्रकार श्रद्धापूर्वक साधना सम्पन्न करने पर लक्ष्मी का वास घर में होता ही है।

न्यौछावर- 1551/- रुपये। ♦♦♦

धनकुबेर कवच

प्रत्येक मनुष्य चाहे वह किसी भी समुदाय से संबंधित क्यों न हो, उसे लक्ष्मी की प्राप्ति एवं उसके महत्व को स्वीकार करना ही पड़ता है। इसलिए शास्त्रों में बताया गया है कि व्यक्ति को श्री सम्पन्न होना चाहिए।

जो लोग व्यापार करते हैं, अपनी ओर से वे सम्पूर्ण प्रयास करते हैं, कि धन संचय हो, किन्तु आय के पर्याप्त स्त्रोत नही बन पाते हैं। इन कठिनाईयों के निवारण एवं आर्थिक स्थिति में वृद्धि का सर्वश्रेष्ठ उपाय है- धनकुबेर कवच।

व्यक्ति ऊपर उठने की आकांक्षा लिये दिन-रात परिश्रम करते हैं, खून-पसीना एक कर देते हैं लेकिन फिर भी उन्हें वो सब नहीं मिल पाता जो वे चाहते हैं।

हर व्यक्ति अपने जीवन में अष्ट लक्ष्मी को प्राप्त करना चाहता है। जब लक्ष्मी को सम्पूर्णता से अपने जीवन में समाहित करने की बात आती है, तो वहां स्वतः ही अष्ट लक्ष्मी की महत्ता नजर आती है क्योंकि अष्ट लक्ष्मी से ही आठों प्रकार के ऐश्वर्य के मार्ग खुलते हैं। अष्टलक्ष्मी की महिमा का वर्णन इस प्रकार से होता है-

(1) धन लक्ष्मी- (2) यश लक्ष्मी- (3) आयु लक्ष्मी (4) वाहन लक्ष्मी
(5) स्थिर लक्ष्मी (6) गृह लक्ष्मी (7) सन्तान लक्ष्मी (8) भवन लक्ष्मी

व्यक्तित्व को सम्पूर्ण बनाने के लिये अष्ट लक्ष्मी के साथ ही साथ लक्ष्मी की नौ कलाओं का विकास होना भी जरुरी है। जिस व्यक्ति में लक्ष्मी की इन नौ कलाओं का विकास होता है, वहीं लक्ष्मी चिरकाल के लिए विराजमान होती है। यह नौ कलाएँ इस प्रकार है- (1) विभूति, (2) नम्रता, (3) कान्ति, (4) तुष्टि, (5) कीर्ति, (6) सन्तति, (7) पुष्टि, (8) उत्कृष्टि (9) ऋद्धि।

इन सब के लिए चाहिए लक्ष्मी की कृपा दृष्टि, ताकि धन की आवक बनी रहें, वहीं नवग्रहों की भी पूर्ण कृपा बनी रहें, क्योंकि जिस तरह लक्ष्मी की नव कलाएँ हैं, वहीं नवग्रहों से भी इनका संबंध है। यह तो सभी जानते है प्रत्येक ग्रह प्रसन्न होने पर विशेष प्रकार की प्रसन्नता देता है एवं अप्रसन्न होने पर विशेष प्रकार की हानि देता है। सूर्य प्रसन्न होने पर खूब सारी दौलत, विपुल सम्पत्ति एवं 'राज्य लक्ष्मी' देता है एवं अप्रसन्न होने पर अराज्य अलक्ष्मी देता है। इसी प्रकार जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अनुकूल हो तो आरोग्य की प्राप्ति होती है चन्द्रमा 'आरोग्य लक्ष्मी' देता है प्रतिकूल होने पर अनारोग्य अलक्ष्मी देता है ऐसे जातक के सारे रुपये दवाईयों व रोगों के ईलाज में खर्च हो जाते है। मंगल ऋणमोचन माना जाता है अनुकूल होने पर व्यक्ति पर किसी प्रकार का कर्जा नही रहने देता तथा कुऋण अलक्ष्मी देता है। बुध बुद्धि दायक ग्रह है यह अनुकूल होने पर 'सुज्ञान लक्ष्मी' देता है तथा प्रतिकूल होने पर कुज्ञान अलक्ष्मी देता है। ऐसा जातक बुरे व्यसनों एवं कुबुद्धि गलत प्लानिंग से सारे घर का पैसा फूंक डालता है। गुरु पुत्र प्रदाता है। यह 'सुपुत्र सुलक्ष्मी' देता है विपरीत होने पर कुपुत्र कुलक्ष्मी देता है। शुक्र स्त्री प्रदाता है। अनुकूल होने पर 'सुभार्या सुलक्ष्मी' देता है तथा प्रतिकूल होने पर कुभार्या कुलक्ष्मी देता है। शनि व्यक्ति को करोड़पति बना डालता है 'श्रेष्ठा लक्ष्मी- देता है। एवं अप्रसन्न होने पर फकीर, महादरिद्री बना डालता है। राहु 'सुमित्र लक्ष्मी' देता है एवं दूसरी अवस्था से शत्रु अलक्ष्मी देता है। केतु कीर्ति दायक, यश, पताका ध्वजा का प्रतीक है। यह 'सुकीर्ति सुलक्ष्मी' देता है एवं प्रतिकूल होने पर अपकीर्ति अलक्ष्मी देता है।

लक्ष्मी व नवग्रह की कृपा से लक्ष्मी की प्राप्ति तो हो जाती है लेकिन संचय के बिना, स्थिर लक्ष्मी के बिना भाग-दौड़ का कोई अर्थ नहीं, इसीलिए संचय के लिए देवादिदेव कुबेर के कृपा की आवश्यकता होती है। पुराणों के अनुसार राजाधिराज धनाध्यक्ष कुबेर समस्त यक्षों, गृहयकों और किन्नरों-इन तीन देवयोनियों के अधिपति कहे गये हैं। ये नवनिधियों-पद्म, महापद्म, शंग, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और वर्चसु के स्वामी है। एक निधि भी अनन्त वैभवों की प्रदाता मानी गयी है और राजाधिराज कुबेर तो गुप्त, प्रकट संसार के समस्त वैभवों के अधिष्ठाता-देवता हैं।

शास्त्रों में लक्ष्मी साधना के साथ-साथ कुबेर के ध्यान का भी वर्णन है। कुबेर, लक्ष्मी द्वारा प्रदत्त धन-वैभव को अनंतकाल तक संरक्षित रखते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जिस प्रकार जल, वायु एवं अग्नि आदि के देवता होते हैं, उसी प्रकार धन-धान्य, वैभव, यश के अधिष्ठाता कुबेर हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं कि देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर हैं।

कुबेर देव की नौ निधियां मनुष्यों की अर्थ देवता कही गयी है। सात्विक निधियां दुर्लभ है। राजसी निधि या कुछ न्यून दुर्लभ है। तामसी निधियां ही अधिक पाई जाती है। किसी किसी व्यक्ति पर दो या अधिक निधियों की दृष्टि भी हो सकती है। तो फिर आप भी इन्हें प्राप्त करने का प्रयास अवश्य करें।

यदि आप की निम्न आकांक्षाएँ है.....

1. अथक प्रयासों के बावजूद आशातित धन लाभ नहीं होता।
2. व्यापार/दोस्तों/सरकारी महकमों में पैसा अटका पड़ा है।
3. धन लाभ तो है, परन्तु धन संचय नहीं होता।
4. पैतृक संपत्ति में बढ़ोतरी की जगह उसमें से खर्च हो रहा है।
5. पैतृक संपत्ति मिलने में दिक्कते हैं।...
6. आप की संपत्ति पर कोई अन्य व्यक्ति कब्जा जमा कर बैठा है।
7. आप को चिंता है कि आपने जो संपत्ति जोड़ी है, वह पीढ़ियों तक संचित नहीं रहेगी?

धनकुबेर कवच न्यौछावर 7500/-

BANK A/C. No.

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

SBI, A/C No. 329-8988-9790
IFSC-Code : SBIN0006490

HDFC A/C No. 014-225-6000-5331
IFSC-CODE : HDFC0000142

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र 'त्रिनेत्र' प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर(राज.)
फोन : 0291-2621625, 2440011-14, 2618625, 2440111/999 फैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.fameandfortune.org /fameandfortune /Kamal Shrimali